

हरिकथामृथसार  
बिंबोपासन संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे  
परम भगवधभक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

मुक्त बिंबनु तुरिय जीव  
न्मुक्तबिंबनु विश्व भव सं  
सक्त बिंबनु तैजसनु असृज्यरिगे प्राज्झन्य  
शक्तनादरु सरिये सवो  
द्रिक्त महिमनु दुःखसुखगळ  
व्याक्तमाडुतलिप्प कल्पांतदलि बप्परिगे २४-०१

अन्ननामक प्रकृतियोळग  
च्छिन्ननागिह प्राज्झन्य नामदि  
सोन्नोडल मोदलादवरोळनाद तैजसनु  
अन्नदांबुदनाम विश्वनु  
भिन्ननाम क्रियगळिंदलि  
तन्नोळगे ता रमिप पूणानंद ज्झन्यानघन २४-०२

बूदियोळगडगिप्पनलनो  
पादि चेतन प्रकृतियोळ  
गन्नादनन्नाह्यदि करेसुव ब्रह्म शिवरूपि  
ओदनप्रद विष्णु परमा  
ह्लादवीवुत तृप्तिपडिसुव  
गादमहिमन चित्रकमवनाव बणिसुव २४-०३

नाद भोजन शब्ददोळु बिं  
दौदनौदकदोळगे घोषनु  
वाददोळु शांताख्य जठराग्रियोळगिइरुतिप्प  
वैदिकसुशब्ददोळु पुत्र स

होदरानुजरोळति

शांतन पादकमलवनवरत चिंतिसु ई परियलिंद २४-०४

वेदमानि रमानुपास्य गु

णोदधि गुणत्रय विवजित

स्वोदरस्थित निखिळ ब्रह्मांडाद्विलअणनु

साधुसम्मतवेनिसुतिह निषु

सीद गणपतियेंब श्रुति प्रति

पादिसुवुदनवरतवन गुणप्रांतगाणदले २४-०५

करेसुवनु मायारमण ता

पुरुषरूपदि त्रिस्थळगळोळु

परम सत्पुरुषाथद महत्त्वदोळगिहु

सरसिजभवांड स्थित स्त्री

पुरुष तन्मात्रगळ ऐको

तरदर्शेंद्रियगळ महाबूतगळ निमिसिद २४-०६

ई शरीरगे पुरुष त्रिगुणदि

श्रीसहित तानिहु जीवरि

गाश लोभाज्झन्यान मद मत्सर कुमोह उध

हास हरुष सुषुप्ति स्वप्नपि

पासजाग्रति जन्म स्थिति मृति

दोष पुण्य जयापजय द्वंद्वगळ कल्पिसिद २४-०७

रिविध गुणमय देह जीवके

कवचदंददि तोडिसि कम

प्रवहदोळु संचारमाडिसुतिप्प जीवरन

कविसि मायारमण मोहव

भवके कारणनागुवनु सं

श्रवण मननव माळपरिगे मोचकनेनिसुतिप्प २४-०८

साशनाह्वय स्त्रीपुरुषरोळु  
वासवागिहनेंदरिदु वि  
श्वासपूर्वक भजिसि तोषिसु स्वावरोत्तमर  
क्लेशनाशन अचलगळोळु प्र  
काशिसुतलिहनशनरूपौ  
पासनव माळपरिगे तोपनु तन्न निजरूप २४-०९

प्रकारांतर चिंतिसुवदी  
प्रकृतियोळु विश्वादिरूपव  
प्रकटमाळपेनु यथामतियोळु गुरुकृपाबलदि  
मुकुरनिमित सददोळु पौगे  
स्वकीय रूपव कांब तेरदलि  
अकुटिलात्म चराचरदि सवत्र तौरुवनु २४-१०

परिच्छेदत्रय प्रकृतियोळ  
गिरुतिहनु विश्वादिरूपव  
धरिसि आत्मादित्रिरूपव ई षणत्रयदि  
सुरुचि ज्झन्यानात्म स्वरूपदि  
तुरियनामक वासुदेवन  
स्मरिसु मुक्तिसुखप्रदायकनीतनहुदेंदु २४-११

कमलसंभवजनक जड जं  
गमरोळगे नेलेसिदु क्रम व्यु  
त्क्रमदि कमव माडि माडिसुतिप्प बैसरदे  
अम आम अमीहनाह्वय  
सुमनससुररोळगे अहं  
ममन मम एंदी युपासनेगैव प्रांतदलि २४-१२

ई समस्त जगत्तु ईशा  
वास्यवेनिपुदु कायरूपवु  
नाशवादरु नित्यवै सरि कारण प्रकृति

श्रीशगे जडप्रतिमेयेनिपुदु  
मासदोम्मेगु सन्निधानवु  
वासवागिह नित्य शालिग्रामदोपादि २४-१३

ऐकमेवाद्वितीय रूपा  
नेक जीवरोळिदु ता प्र  
त्येक कमव माडि मोहिसुतिप्प तिळिसदले  
मूक बधिरांधादि नामक  
ई कळेवरदोळगे करेसुव  
माकळत्रन लौकिक महामहिमेगेनेंबे २४-१४

लोकबंधुलोकनाथ वि  
शोक भक्तर शोकनाशन  
श्रीकराचित सोकदंददलिप्प सवरोळु  
साकुवनु सज्जनर परम कृ  
पाकरेश पिनाकिसन्नुत  
स्वीकारिसु वानतरु कोट्ट समस्त कमगळ २४-१५

अहित प्रतिमेगळेनिसुवुवु  
देह गैहापत्य सति धन  
लोह काष्ठ शिला मृदात्मकवाद द्रव्यगळु  
स्नेहदलि परमात्म एनगि  
तीहनेंदरिदनुदिनदि स  
म्मोहकोळगागदले पूजिसु सवनामक २४-१६

श्रीतरुणिवल्लभगे जीवरु  
चेतनप्रतिमेगळु औत  
प्रोतनागिद्वेल्लरोळु व्यापार माडुतिह  
होत सवेन्द्रियगळोळु सं  
प्रीतियिंदुंडुणिसि विषय नि  
वात देशग दीपदंददलिप्प निभयदि २४-१७

भुत सौकिद मानवनु बहु  
मातनाडुव तेरदि महद  
द्धूत विष्णवावेशदिंदलि वतिपुदु जगवु  
कैतवोक्तिगळल्ल शेष फ  
णातपत्रगे जीवपंचक  
व्रातवेदिगु भिन्नपादाह्वयदि करेसुवुदु २४-१८

दिवियोळिप्पुवु मूरु पादग  
ळवनियोळिगिहुदोंदु ई विध  
कविभिरीडित करेसुव चतुष्पातु तानेंदु  
इवन पादचतुष्टयगळनु  
भवके तंदु निरंतरदि उ  
द्धवन सख सवांतरात्मकनेंदु स्मरिसुतिरु २४-१९

वंशबागलु बेळेय कंडु न  
रांशदलि शोभिपुदु बागद  
वंश पाशदि कट्टि ऐरुव डोंब मस्तकके  
कंसमदन दासरिगे नि  
स्संशयदि वंदिसदे ना वि  
द्वांसनेंदहंकरिसे भवगुणदि बंधिसुव २४-२०

ज्योतिरूपगे प्रतिमेगळु सां  
कैतिकारोपित सुपौरुष  
धातु सप्तक धैय शौयोदाय चातुय  
मातु मान महत्व सहन सु  
नीति निमलदेश ब्राह्मण  
भूतपंचक बुद्धि मोदलादिंद्रिय स्थान २४-२१

जीवराशियोळमृत शाश्वत  
स्थावरगळोळु स्थाणुनामक

नावकालदलिप्पनजितांतनेदेनिसि  
गोविदांपति गायनप्रिय  
सावयव साहस्रनाम प  
रावरेश पवित्रकम विपश्चितनु साम २४-२२

माधवन पूजाथवागि नि  
षेधकमव माडि धन सं  
पादिसलु सत्पुण्य कमगळेनिसिकोळुतिहवु  
स्वोदरंभणाथ नित्यदि  
साधुकम माडिदरु सरि  
ऐदुवनु देहांतरव संदेहविनितिल्ल २४-२३

अपगताश्रय एल्लरोळगि  
दुपमनेनिपानुपम रूपनु  
शफरकेतन जनक मोहिप मोहकन तेरदि  
तपनकोटि समप्रभासित  
वपुवेनिप कृष्णादि रूपक  
विपगळंतुंडुणिप सवत्रदलि नेलसिदु २४-२४

अडवियोळु बित्तदले बेळेदिह  
गिडद मूलिके सकल जीवर  
ओडलोळिप्पामयव परिहरगैसुवंददलि  
जडजसंभवजनक त्रिजग  
द्वडेय संतैसेनलु अवरि  
द्वेडेगे बंदोदगुवनु भक्तर भिडेय मीरदले २४-२५

श्रीनिकेतन तन्नवर दे  
हानुबंधिळंते अव्यव  
धानदलि नेलिसिप्प सवद सकल कामदनु  
ऐनु कोट्टुदु भुंजिसुत म  
दानेयंददि संचरिसु म

तेनु बैडदे भजिसुतिरु अवनंघ्रिकमलगळ २४-२६

बैडदले कोडुतिप्प सुररिगे  
बैदिदरे कोडुतिहनु नररिगे  
बैदि बळलुव दैत्यरिगे  
कोडनोम्मे पुरुषाथ  
मूढरनुदिन धमकमव  
माडिदरु सरि अहिकफलगळ  
नीडि उन्मत्तरनु माडि महानिरयवीव २४-२७

तरणि सवत्रदलि किरणव  
हरहि तत्तद्वस्तुगळननु  
सरिसि अदरदरंते चायव कंगोळिप तेरदि  
अरिधराजानेज जगदोळ  
गिरुव छायातपनेनिसि सं  
करुषणाह्वय अवरवर योग्यतेगळंतिप्प २४-२८

ई विधदि सवत्र लकुमी  
भू वनितेयर कूडि तन्न क  
ळाविशेषगळेळु कडेयलि तुंबि सैव्यतम  
सैवकनु तानेनिसि माया  
दैविरमण प्रविष्टरूपक  
सैवे माळप शरण्य शाश्वतकरुणि कमलाअ २४-२९

प्रणवकारण काय प्रतिपा  
द्यनु परात्पर चैतनाचे  
तन विलअणनंतसत्कल्याण गुणपूण  
अनुपमनुपासित गुणोदधि  
अनघ अजितानंत निष्किं  
जनप्रिय निविकार निराश्रयाव्यक्त २४-३०

गोप भीय भवांधकारके  
दीपवोदगे सकल सुखसद  
नोपरिग्रहवेनिसुतिप्पुदु हरिकथामृतवु  
गोपति जगन्नाथविट्टल स  
मीपदलि नेलेसिदु भक्तर  
नापवगर माडुवनु महदुःखभवदिंद २४-३१

www.yousigma.com